नवभारत
(25.05.2015)

आखिरकार प्रसूता ने तोड़ दिया दम

बैतूल,24 मई नससे. डॉक्टरों को धरती के भगवान का दर्जा दिया जाता है, लेकिन वही लापरवाही बरते तो मरीज की जान जाना निश्चित है। ऐसा ही एक गंभीर मामला सामने आया है। जहां पाढर अस्पताल के डॉक्टरों की लापरवाही के चलते एक प्रसुता ने दम तोड़ दिया। मिली जानकारी के मुताबिक आमला क्षेत्र के ग्राम रम्बाखेड़ी निवासी ललिता पति रितेश पवार (23) को डीलेवरी के लिए गत दिवस जिला चिकित्सालय में भर्ती किया गया था।

डॉक्टरों ने सीजर आपरेशन बताकर उसे पाढर अस्पताल रेफर कर दिया था। वहां महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया, लेकिन वह भी कुछ समय बाद उसकी भी मृत्यु हो गई। पाढर अस्पताल में प्रसुता की इलाज के लिए 70 हजार रूपएं की मांग की जा रही थी। परिजन माली हालत के चलते इतनी रकम जुटाने में असमर्थ थे और उन्होंने इस मामले को लेकर विधायक हेमंत खण्डेलवाल को फोन लगाया। ताकि पैसों की मदद हो सके। विधायक ने भी फोन लगाकर पाढर अस्पताल में उपचार करने के निर्देश दिए। ललिता के पति रीतेश पंवार ने आरोप लगाते हुए कहा कि पाढर अस्पताल में पैसे नहीं दिए जाने के कारण इलाज में लापरवाही बरती गई। यही नहीं आपरेशन गंभीर बताकर महिला की बच्चेदानी भी निकाल ली गई। जब महिला की हालत और बिगड़ गई और पैसों की व्यवस्था नहीं होने से परिजनों ने महिला को फिर से जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया जहां रविवार के दिन महिला ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

अंत्योदय कार्ड भी नहीं आया काम- शासन की ओर से गरीबी रेखा में जीवन यापन करने वाले परिवारों को इलाज के लिए निःशुल्क व्यवस्था करने हेतु गरीबी रेखा का राशन कार्ड एवं अंत्योदय कार्ड बनाया गया है, ताकि शासन की योजना का लाभ हर गरीब को मिल सके, लेकिन इस गरीब महिला के इलाज के लिए न तो राशन कार्ड काम आया और न अत्योदय कार्ड। उल्लेखनीय है कि पहले भी विधायकों ने जिला चिकित्सालय में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों एवं डॉक्टरों की बैठक ली थी। इसमें विधायक ने निर्देश दिए थे कि जिला अस्पताल से पाढर रेफर प्रसुताओं से डीलेवरी के पैसे नहीं लिए जाएं।